फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी. फरीदाबाद — 121001

नई सीरीज नम्बर **309** *1/—* *मार्च* **2014**

कै ये प्रगति और विकास के सैं ? और के सै यो भ्रष्टाचार ?

● हवा, पानी, मिट्टी खराब करना...... माट्टी खराब करना। तन को बीमार और मन को दूषित करना। धरती के पार जा कर अन्तरिक्ष में भी विनाश के बीज बोना। यह हैं आज प्रगति और विकास के सामान्य क्रियाकलाप। और, ऐसे करमों के लिये भ्रष्ट विचार तथा भ्रष्ट आचार, भ्रष्टाचार एक आम जरूरत है।

● 1914 से 1919 के दौरान सरकारों के बीच युद्ध में ढाई करोड़ लोगों के मारे जाने ने प्रगति और विकास का दिवालियापन ढोल-नगाड़ों से जग जाहिर कर दिया था। और, 1939 से 1945 के दौरान सरकारों के बीच युद्ध में पाँच करोड़ लोगों के मारे जाने ने बचे-खुचे भ्रमों को दफन किया। लेकिन, प्रगति और विकास की जगह क्या, विकल्प क्या, आलटरनेटिव क्या की गुत्थी बनी रही। ऐसे में भाँति-भाँति के भोलेपन और काँइयापन कहर ढाते रहे हैं।

●बुरा है, लेकिन जरूरी है। " आवश्यक बुराई" मनुष्यों की नियती-सी लगने लगी। अनजाने में नहीं, बल्कि, जानते हुये गलत करना नई महामारी बनी, दुनियादारी बनी।

●1965-1970 के दौरान हावी टेढेपन के खिलाफ सीधेपन ने अँगड़ाई ली। विश्व-भर में जन उभारों की लहरें उठी। सामाजिक मन्थन ने भोलेपन और काँइयापन को काफी सिकोड़ दिया। पर फिर भी, काफी धुन्ध बनी रही। ऐसे में सामाजिक मामलों के तकनीकी समाधानों की एक बड़ी आँधी-सी आरम्भ हुई। इसे त्रासदी ही कह सकते हैं कि तेज दिमाग, तीव्र-तीक्ष्ण बुद्धि वाले तकनीकों में उलझ कर गुत्थियाँ बढाते हैं।

● विद्वानों ने, ज्ञानियों ने प्रगति और विकास की लाश में प्राण फूँकने के लिये इलेक्ट्रोनिक्स का ब्रह्मास्त्र चलाया। पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमरीका, जापान में उलट-पलट मचाते इलेक्ट्रोनिक्स से उपजे बवंडर ने रूस तथा पूर्वी यूरोप में ढाँचों को धराशायी कर दिया। चीन में बुर्के का लेबल बचा। अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका, एशिया में पाँच-दस वर्ष में वह होने लगा जिसे होने में यूरोप-अमरीका-जापान में 100-150 वर्ष लगे थे।

●महिलाओं के मजदूर बनने की प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र हुई। पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमरीका में 1970 से इतनी बड़ी सँख्या में औरतें मजदूर बनने लगी कि मजदूर मानी पुरुष विगत की बात बनी। चीन में 1980 से यह गति इतनी तेज हुई कि आज वहाँ फैक्ट्री मजदूरों में अस्सी प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। भारत में 1990 से बढती रफ्तार ने आज हर क्षेत्र के मजदूरों की कतारों में नारी उपस्थिति को उल्लेखनीय बना दिया है। बंगलादेश में गारमेन्ट फैक्ट्रियों में अधिकतर मजदूर महिला हैं......

● संसार में दस्तकारों और किसानों की सामाजिक मौत तथा सामाजिक हत्या दो सौ वर्ष से चल रही है। अस्सी-सौ वर्ष पहले यूरोप और उत्तरी अमरीका से किसान-दस्ताकर खत्म-से हो गये लेकिन विश्व के अन्य क्षेत्रों में, विशाल हिस्से में चालीस वर्ष पहले भी किसान-दस्तकार उल्लेखनीय थे। भारत में सन् 2000 आते-आते दस्तकार तो समाप्त-से हो गये और किसानों की सामाजिक मौत तथा सामाजिक हत्या की गति आसमान छूने लगी। आज दुनिया-भर में एक तरफ मजदूर-ही-मजदूर दिखाई देते हैं और दूसरी तरफ दिन-रात बढते फालतू-नाकारा-बेकार-बेरोजगार बनते-बनाये जाते लोगों की भीड़-ही-भीड़।

●जन्म-स्थान से सैंकड़ों-हजारों मील दूर जाना अब लोगों के लिये आम बात बन गई है। उत्पादन आपस में इतना गुँथ गया है कि टैक्स लगाने के लिये किस कार को देशी और किस कार को विदेशी कहा जाये इस पर अमरीका में संसद में माथा-पच्ची होती है।

●इंग्लैण्ड-जर्मनी-जापान-अमरीका-रूस क्षेत्रों का फैक्ट्री उत्पादन और बने हुये माल के निर्यात में 1980-1990 तक प्रभुत्वकारी दबदबा था। आज चीन-भारत-बंगलादेश-कम्बोडिया-वियतनाम-.........वाले क्षेत्र फैक्ट्री उत्पादन और बने हुये माल के निर्यात में उल्लेखनीय दखल रखते हैं।

●और, कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति अब सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हावी हो गई है। फुटकर व्यापार में दुकान-दुकानदार के स्थान पर मॉल-रीटेल चेन-शॉप वरकर, इंजीनियर बनते लाइन इंजीनियर-टेकनीकल वरकर, विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालय साफ-साफ कौशल तथा ज्ञान-उत्पादन की फैक्ट्रियाँ और अध्यापक-प्रवक्ता बनते एजुकेशनल वरकर, अस्पतालों में डॉक्टर बनते मेडिकल वरकर.......

●ऐसे में विश्वव्यापी बना सामाजिक मन्थन इधर बहुत-ही तीव्र हो गया है। अनेकानेक प्रकार के व्यवहार और विचार के योगदान ने भोलेपन तथा काँइयापन के लिये स्थानों को इतना सिकोड़ दिया है कि अब यह असंगत हो गये हैं। यह इसीलिये है कि 2007 में स्थापित मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के मजदूरों ने जटिल व बड़ी मानी जाती बाधाओं को जून 2011 में छलाँगों में पार करना आरम्भ किया और जुलाई 2012 में मजदूरी-प्रथा के दो प्रतीकों, मैनेजरों तथा फैक्ट्री बिल्डिंग पर हजारों मजदूरों

(बाकी पेज तीन पर)

किससे बात करें ?

बंगलादेश की गारमेन्ट फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा अचानक कई फैक्ट्रियों में एक साथ काम बन्द करना नियमित-सा बन गया है। काफी बड़े पैमाने पर मजदूरों के बीच तालमेल रहते हैं और कई दिन तक कई फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द रहता है। कोई नेता नहीं होता। कोई यूनियन नहीं होती। समझौता वार्ताओं के लिये सामने कोई नहीं होता। किससे बात करें? एक साहब के शब्दों में : ''ऐसे समय में वार्ता के लिये किसी का होना बहुत अच्छा रहेगा। इस समय ऐसा कोई नहीं है और विरोध जारी रहते हैं।''

बंगलादेश गारमेन्ट मैनुफैक्चरर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स एसोसियेशन के 3500 सदस्य हैं। सन् 2010 में 72,000 करोड़ रुपये के सिलेसिलाये वस्त्रों का निर्यात और 2013 में यह एक लाख बत्तीस हजार करोड़ रुपये का। बंगलादेश से निर्यात का 75-80 प्रतिशत गारमेन्ट एक्सपोर्ट है। बंगलादेश की संसद के साठ प्रतिशत सदस्यों के हित सिलसिलाये वस्त्रों के निर्माण और निर्यात से जुड़े हैं।

16 लाख मजदूर बंगलादेश में गारमेन्ट फैक्ट्रियों में काम करते हैं और इनमें से 13 लाख महिला मजदूर हैं। मजदूरों की बढती हलचलों को नियन्त्रण में करना कम्पनियों और सरकार के लिये अधिकाधिक मुश्किल होता जा रहा है। हिंसा से, कठोरता से काबू में रखना फेल हो रहा है। दोनों मुख्य राजनीतिक पार्टियों का मजदूरों में कोई असर नहीं है। किसी भी नेता, किसी भी यूनियन का मजदूरों में प्रभाव नहीं है। और मजदूर हैं कि साहबों के लिये नित नई और बढते पैमाने पर समस्यायें पैदा कर रहे हैं।

मजदूरों को नाथने के लिये अमरीका सरकार की संसद ने सलाह दी : यूनियनें स्थापित करो। अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) ने सुझाव दिया : यूनियनों को प्रोत्साहित करो। बंगलादेश सरकार ने कहा : यूनियनें बनाओ। विश्व की बड़ी यूनियनों ने बंगलादेश में यूनियनों से हाथ मिलाया है। गारमेन्ट मजदूरों के बीच 2012 में दो यूनियन रजिस्टर्ड थी जबकि अब 61 यूनियनें पंजीकृत हैं। मजदूरों को नाथने के लिये मजदूरों की स्थिति सुधारने की बातें करने वालों की सँख्या बढाने के प्रयास बहुत तेज हो गये हैं। बंगलादेश सरकार ने गारमेन्ट मजदूरों के 2010 के वेतन 3000 टका को बढा कर 2013 में 5300 टका किया है......और मजदूरों के प्रवक्ता-नेता-मसीहा बनने को आतुर लोगों ने 8140 टका की माँग की थी।■

और यह बातें

विभा ओवरसीज एग्जिम मजदूर : ''12/6 गुरुकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया (भारत गीयर फैक्ट्री के पास), फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में रविवार, 2 मार्च को ढाई बजे के करीब कन्टेनर खाली करते समय अकस्मात धमाका हुआ। कन्टेनर में मौजूद चार मजदूर धमाके ने बाहर फेंक दिये। कन्टेनर में छेद हो गये और आसपास काम कर रहे कई मजदूर भी गिर पड़े। बुरी तरह से घायल चार को बदरपुर में सारस अस्पताल में भर्ती किया है। नाइजीरिया, हाँग काँग आदि से कन्टेनरों में कबाड़ आता है जिसमें कई प्रकार के बम और मिसाइलें भी होती हैं। फैक्ट्री में कबाड़े की छँटाई होती है और फिर पिघला कर अल्युमीनियम की सिल्लियाँ बनाई जाती हैं। ***मारुति सुजुकी, होण्डा*** आदि को माँगी अनुसार क्वालिटी की सिल्लियाँ दी जाती हैं। फैक्ट्री में काम करते 175 मजदूरों में से भट्टी पर काम करने वाले 15-20 मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. थी। जाँच वाले आते तब 150 मजदूरों को दूसरे गेट से बाहर कर देते। इधर दो महीने से 15 और मजदूरों पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू किये हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पचास महिला मजदूरों की तनखा 4600-4800 रुपये। कन्टेनर खाली करने वाले मजदूर एक बाहर के ठेकेदार के थे।''

एन एच के स्प्रिंग्स श्रमिक : ''प्लॉट 31 सैक्टर-3, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में एस टी बी वायर प्लान्ट में 47 स्थाई मजदूर तथा तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर हैं और कॉयल प्लान्ट में 22 स्थाई मजदूर तथा ठेकेदार के जरिये रखे 112 वरकर हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की दिन की शिफ्ट 12½ घण्टे की और रात की 11½ घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से — पे स्लिप देते नहीं, दिखाते हैं और उसमें ओवर टाइम 100 घण्टे है तो 50 घण्टे दिखाते हैं जिनका भुगतान डबल रेट से! ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस देते ही नहीं। उत्पादन बढाते रहते हैं और मजदूर कम करते रहते हैं। फोरजिंग, हीट ट्रीटमेन्ट, गेजिंग में गर्म काम है और आधे घण्टे बाद रिलीवर मिलता था। आधा घण्टा रिलीव समय आराम के लिये होता था पर दिसम्बर 2013 से उस समय दूसरा काम करवाने लगे हैं। इससे एक्सीडेन्ट के खतरे बढ गये हैं। ऐसे में मजदूर नौकरी भी छोड़ने लगे हैं। इधर 26 फरवरी से ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के लिये फैक्ट्री में मोबाइल ले जाना बन्द कर दिया है। हैल्पर ग्रेड देते हैं और मशीनें चलवाते हैं। यहाँ ***मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, टोयोटा, होण्डा*** का काम होता है और ***टाटा*** तथा ***अशोक लेलैण्ड*** के सैम्पल निकले हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर जापान से आया है........

फोन करें, पोस्ट कार्ड डालें

हरियाणा : 1. मुख्य मन्त्री, चौथी मंजिल, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ
फोन नं. 0172-2749396 (ऑफिस), 0172-2740877 (निवास)
2. श्रम मन्त्री, छठी मंजिल, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ
फोन नं. 0172-2740145
3. श्रम आयुक्त, 30 बेज बिल्डिंग, पहली मंजिल, सैक्टर-17, चण्डीगढ फोन नं. 0172-2701373, 2701266 (फैक्स)
दिल्ली : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054 फोन नं. 23951115, 23962823 (फैक्स)

बाहर नहीं निकले..... (पेज चार का शेष)

दोपहर 2 बजे से सहायक श्रम आयुक्त के यहाँ समझौता वार्ता में कई लीडर शामिल हुये। मामला थकाने की सीमा तक खिंचता गया। सहायक श्रम आयुक्त ने दबाव डाला, यूनियन ने भी दबाव डाला कि अभी यह कर लो बाकी बाद में देखेंगे। रात 9 बजे समझौता हुआ। रात 10½ बजे फैक्ट्री से बाहर बुलाया। ट्रान्सफर कियों को 15 दिन में वापस लेने की बात थी और इन में प्रत्येक की दो-तीन-चार महीनों की तनखा गई। मीटिंग में सब को सुनाया तब एतराज हुआ। पर 20 फरवरी से सामान्य ड्युटी आरम्भ — उत्पादन नहीं, पहले पूर्ण सफाई और इस दौरान 28 फरवरी तक फैक्ट्री के अन्दर ट्रेनिंग।''■

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2014 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

अन्दर ही नहीं गई

जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स -जेय उशिन मजदूर : '' प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्रियों में दिल्ली के चारों तरफ, गुड़गाँव के चारों तरफ, झज्जर, रेवाड़ी, पटौदी से बसों में महिला मजदूर आती हैं। मानेसर, कासन, खोह, नाहरपुर से पैदल भी महिला मजदूर आती हैं। अन्य दिनों की भाँति सोमवार, 10 फरवरी को सुबह पौने नो के करीब बसों से तथा पैदल पहुँची दो हजार से ज्यादा महिला मजदूर एकत्र हुई। दोनों फैक्ट्रियों में प्रवेश एक ही गेट से होता है और दोनों में ड्युटी 9 बजे से है। परन्तु 10 फरवरी को 9 बजे कोई महिला मजदूर अन्दर नहीं गई। डेढ-दो घण्टे गेट के बाहर महिला मजदूर खड़ी रही और हरियाणा के मुख्य मन्त्री द्वारा 1 जनवरी से 8100 रुपये न्यूनतम वेतन की घोषणा की बात उठाई। पुलिस। बसों में महिला मजदूरों के साथ सीनियर स्टाफ भी गुप्तचर की तरह रहता है ताकि लड़कियाँ बातचीत नहीं करें। लेकिन कम्पनियों को भनक तक नहीं लगी और दो हजार से ज्यादा महिला मजदूरों ने 10 फरवरी को मिल कर कदम उठाया। जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स ***निप्पोन सेईकी***, जापान और यहाँ ***जे पी मिण्डा*** समूह का संयुक्त उद्यम है। जे एन एस में ***होण्डा, बजाज, हीरो, सुजुकी, यामाहा*** दुपहियों और ***मारुति सुजुकी*** तथा ***होण्डा*** कारों के ऑटो मीटर बनते हैं। जेय उशिन संयुक्त उपक्रम है ***उशिन लिमिटेड,*** जापान और जे पी मिण्डा समूह का तथा इसमें वाहनों की चाबियाँ एवं दूर से बन्द किये जाते ताले बनते हैं। जे एन एस का वार्षिक उत्पादन 500 करोड़ रुपये का है और जेय उशिन का करीब 600 करोड़ रुपये का। इन फैक्ट्रियों में काम करते पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। शिफ्ट 15 दिन में बदलती है तब एक शिफ्ट के मजदूरों को 16 घण्टे काम करना पड़ता है। फैक्ट्रियाँ 24 घण्टे, महीने के तीसों दिन चलती हैं — जनवरी में मात्र 26 तारीख की छुट्टी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, लड़कों को 22 रुपये प्रतिघण्टा और लड़कियों को 23 रुपये प्रतिघण्टा। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये पाँच-छह सौ लोग वर्दी में, इनकी तनखा बैंक खाते में, यह काम करवाते हैं और रौब झाड़ते हैं। महिला और पुरुष मजदूरों को 8-10-12 ठेकेदारों के जरिये रखा है। मजदूरों को तनखा बारे 9 तारीख को बताया जाता है पर दी 20 तारीख तक जाती है। नौकरी छोड़ने पर पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं — बकाया पैसों के लिये महिला मजदूर गेट पर गालियाँ सुनाती हैं, चप्पल से पिटाई भी करती हैं।''■

निमन्त्रण

मार्च में 30 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail<baatein1@yahoo.co.uk>

रै ये प्रगति आर विकास के सैं ?.....

(पेज एक का शेष)

ने आक्रमण किया। यह इसीलिये है कि फरवरी 2013 में नोएडा और ओखला में हजारों मजदूर इन औद्योगिक क्षेत्रों में फैक्ट्रियों पर हमले करते हैं......

●और इस सब के कारण अब महत्वपूर्ण मामले हर सरकार के नियन्त्रण के बाहर चले गये हैं, प्रत्येक देश के दायरे के बार हो गये हैं। दुनिया में 1890 में पहली बार एक सरकार के पास एक लाख सैनिकों वाली फौज होने की बात सामने आने पर तहलका मच गया था। आज भारत सरकार के पास ही 13 लाख सैनिकों वाली आर्मी, डेढ लाख लोगों वाली एयर फोर्स, फिर नेवी, फिर 12 लाख लोगों वाले अर्ध-सैनिक बल, फिर हर प्रान्तीय सरकार की सशस्त्र पुलिस, फिर थानों वाली पुलिस, फिर अनेकानेक गुप्तचर संगठन, फिर सेक्युरिटी एजेन्सीयों के लाखों सेक्युरिटी गार्ड, फिर कैमरे-टेलीफोन टैपिंग-इन्टरनेट निगरानी-उपग्रह-ड्रोन-मिसाइल-एटम बम-.............और, हर रंग-रूप की सरकार डगमग है। दुनियाँ में सब सरकारें लड़खड़ा रही हैं, नाकारा-दर-नाकारा हो रही हैं।

●लेकिन, पूर्वजों के सकारात्मक को ग्रहण करने और उनके नकारात्मक को त्यागने में असफल लोग भी हैं। आज के चौतरफा सकारात्मक को ग्रहण करने और नकारात्मक को त्यागने में असफल लोग भी हैं। विगत के बोझ और आज की नकारात्मकता का सार है : '' आमूलचूल परिवर्तन नहीं हो सकता — बुनियादी तौर पर कुछ नहीं बदलेगा।'' यह अति निराशा के बहुत गहरे तक पैठ जाने की अभिव्यक्ति है। और, अति निराशा असहायता के दर्शनों, Philosophies of Helplessness का आधार है। एक तरफ कुछ नहीं कर सकते, शून्य हैं वाली बातें और दूसरी तरफ सर्वशक्तिमान, सब कुछ कर सकते हैं की बातें असहायता के दर्शनों का सार हैं। इसलिये अति निराश लोगों में जो तेज-तर्रार होते हैं, काँइयाँ होते हैं वे नेतृत्वकारी भूमिका ग्रहण करते हैं और जो भोले होते हैं वे अनुयायी बनते हैं। आजकल यहाँ अति निराश काँइयाँ लोग नाकारा सरकार को कारगर सरकार बना कर, भ्रष्टाचार पर रोक लगा कर, सेना की मारक क्षमता बढा कर, महाशक्ति बना कर, विश्व-भर की लूट के ढेर में देश का हिस्सा बढा कर, सब कुछ ठीक कर देने के आश्वासन थोक में ढोल पीट-पीट कर दे रहे हैं। जब कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है और कानूनों का पालन अपवाद बन गया है तब यह अथवा वह कानून बना कर सब ठीक कर देने की बातें की जा रही हैं। जहाँ व्यक्ति का होना अथवा व्यक्ति का नहीं होना बराबर-सा हो गया है वहाँ इस अथवा उस व्यक्ति द्वारा सब ठीक कर देने की बातें की जा रही हैं। इस स्तर का बौद्धिक दिवालियापन काँइयापन की अन्तिम साँसों की अभिव्यक्ति है। इसलिये भोलापन भी अब अधिक दिन का मेहमान नहीं है।

●मानव योनि पृथ्वी का एक अंश है और इस अंश द्वारा सम्पूर्ण पर प्रभुत्व के प्रयास हमें विनाश की कगार पर ले आये हैं। लेकिन जिन्दगी काटने की बजाय जीवन जीने की उमंग प्रत्येक व्यक्ति के महत्व और विश्व के सात अरब लोगों के बीच जोड़ों को इस-उस रूप में पूरी पृथ्वी पर सामने ला रही है। एकमेव और एकमय, unique and together नये प्रयोगों में, नई रचनाओं में प्रकट हो रहे हैं। आमूलचूल परिवर्तनों की उमड़-घुमड़ सम्पूर्ण संसार में तीव्र से तीव्रतर हो रही है। मानव और मानव के बीच शत्रुता के आधार अब अत्यन्त कमजोर हो गये हैं। और, मनुष्यों के बीच शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों की समाप्ति तथा पृथ्वी संग मानवों के सौहार्द की स्थापना एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हैं।■

बाहर नहीं निकले

18 फरवरी को ए-शिफ्ट के मजदूर 2 बजे बाहर नहीं निकले और बी-शिफ्ट के मजदूरों ने काम आरम्भ नहीं किया। ढाई सौ मजदूर, जिनमें 110 महिला मजदूर थी, अचानक फैक्ट्री के अन्दर एक स्थान पर बैठ गये। हड़बड़ाई कम्पनी ने पुलिस बुलाई, श्रम विभाग के अधिकारी बुलाये। मजदूर बाहर नहीं निकले — 250 मजदूर 18 की रात को भी फैक्ट्री में रहे, 19 फरवरी को भी पूरे दिन फैक्ट्री में बैठे रहे और फिर रात साढे दस बजे 110 महिला मजदूर तथा 140 पुरुष मजदूर ***बैक्सटर इन्टरनेशनल*** की मानेसर फैक्ट्री से बाहर निकले।

बैक्सटर मजदूर : " प्लॉट 183 सैक्टर-5, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री 2002 में आरम्भ हुई है। मजदूरों को एसोसियेट कहते हैं, कम्पनी के पार्टनर हो कहते हैं। दूर-दूर जा कर आई.टी.आई. और पोलिटेक्निक कॉलेजों से भर्ती करने के समय तनखा 10 हजार रुपये, रहने और खाने का प्रबन्ध है बताते हैं। यहाँ एक महीना फैसिलिटी देते हैं और फिर कहते हैं सॉरी, कम्पनी की पॉलिसी बदल गई है, बेसिक 5000 रुपये ही देंगे। सुबह 6 बजे की शिफ्ट के लिये वाहन साढे चार-पौने पाँच बजे आरम्भ होते हैं। दो-चार माह के शिशुओं की माँ महिला मजदूरों को भी ए व बी शिफ्ट में ही रखते हैं, जनरल शिफ्ट नहीं करते। फैक्ट्री के अन्दर क्रैच बना है, ऑडिट में दिखा देते हैं, पर वास्तव में बच्चों को अन्दर ले जाने नहीं देते। दवाई फैक्ट्री है, बैच खत्म होने पर ही चाय अथवा भोजन — सुबह 6 वाली शिफ्ट में 7½ वाली चाय 9 बजे, 10½ बजे वाला लन्च ब्रेक 12 बजे....... एसोसियेट मानी बैच का बन्धुआ मजदूर। बीच में कभी पानी-पेशाब की बात पर भद्दी गालियाँ। एग्जेक्युटिव और टीम लीडर कहते हैं : ' हमें बात करने के पैसे दिये जाते हैं। प्रोडक्शन करना हमारा काम नहीं है।' भोजन के बारे में लिखने के लिये रजिस्टर रखा है पर कमी लिख दी तो ऊपर बुला कर डाँटते हैं — ' तुम्हारी इतनी औकात हो गई। जैसा देते हैं वैसा खाओ।' इमरजैन्सी में भी गेट पास नहीं, परिवार में मृत्यु पर भी कहते हैं, 'फोन पर हमारी बात करवाओ।' छुट्टी नहीं देते और बहुत जरूरी होने पर कर ली तो प्रमाणपत्र लाओ...... परेशान करने के लिये विभाग बदलना, साप्ताहिक अवकाश को 12-14 दिन तक खींच देना। मजदूरों के मोबाइल गेट पर जमा कर लेते हैं — दुर्घटना का भी छुट्टी के बाद पता चलता है। किसी पुरुष मजदूर ने अगर कह दिया कि सर आप गलत कर रहे हैं तो उसकी लगातार 18 रात ड्युटी लगा देते हैं, विभाग बदल देते हैं, कहते हैं कि सब के सामने क्यों कहा, अकेले में बताते। नवम्बर 2012 में सब बन्दे इक्ट्ठे हो कर तनखा बढवाने के लिये एच. आर. विभाग गये। तब साहब बोले कि एक-एक करके आओ। एक-एक को निजी बातें उठा कर धमकाते और फिर इतना डराते कि सहम जाते, नीचे आ कर तनखा की बात भूल जाते। हम ने आपस में चर्चायें की। मैनेजमेन्ट की परमानेन्ट मजदूरों व ट्रेनी के साथ 10 मई 2013 की जनरल मीटिंग में हम ने तनखा बढाने की माँग की। मैनेजमेन्ट ने मना कर दिया।

" आपस में बात करके हम ने 11 मई से स्लो डाउन करने का तय किया। उत्पादन 30-40 प्रतिशत पर ला दिया। स्लो डाउन हम ने 15 दिन चलाया। वर्क्स कमेटी में चर्चा कर कम्पनी ने उत्पादन प्रोत्साहन राशि, उपस्थिति भत्ता, एक्सीडेन्ट रोकने, रिजेक्शन घटाने के बदले 2717 रुपये प्रतिमाह देने की बात की। साथ ही साथ ओवर टाइम का भुगतान तथा चाय के साथ बिस्कुट देने की बातें कम्पनी ने की (कम्पनी ओवर टाइम के पैसे नहीं देती थी)। तनखा नहीं बढाई पर फिर भी हम ने ऐसे में स्लो डाउन समाप्त कर दिया। कम्पनी ने प्रस्ताव 1 जून 2013 से लागू किया और महीने में 2717 रुपये तो नहीं पर 1700-1800 रुपये मिलने लगे। तब कोई नेता नहीं था।

" ऊपर से कुछ दिन सब शान्त हो गया। पहले इतना पता नहीं था, बस यह था कि यूनियन बनानी है। चुने हुये 45 बन्दों में ही कमरों पर, फोन पर बातें होती रही और यूनियन पंजीकरण के लिये कदम बढाये। पहले 45 ने ही चन्दा किया और बात उजागर होने के बाद बाकी से भी इतना ही चन्दा लिया। राशि की बात छोड़िये। कम्पनी को यूनियन पंजीकरण की प्रक्रिया की जानकारी 18 सितम्बर को लगी और मैनेजमेन्ट हरकत में आई। फर्जी प्रमाणपत्र कह कर दो को 24 सितम्बर को नौकरी से निकाला और 25 सितम्बर से कम्पनी की वालुज, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) स्थित फैक्ट्री में ट्रान्सफर का सिलसिला आरम्भ किया। फैक्ट्री के अन्दर महिला मजदूरों से दुर्व्यवहार बढाया और पुरुष मजदूरों को ज्यादा धमकियाँ दी जाने लगी। कभी दिल्ली के बलात्कार की बातें तो कभी रास्ते में गाड़ी से कुचलने की और फिर कभी यह कि इनके तो खसम हैं, इन्हें खिला देंगे, तुम्हे कौन खिलायेगा. .... फैक्ट्री में 300 स्थाई मजदूर, 100 ट्रेनी और स्टाफ के 150 लोगों के अलावा सफाई तथा लोडिंग-अनलोडिंग के लिये ठेकेदार के जरिये रखे वरकर थे। इधर ट्रान्फर शुरू करते ही कम्पनी ने प्रोडक्शन में भी ठेकेदार के जरिये मजदूर रखने आरम्भ कर दिये। कम्पनी द्वारा दबाव बढाना शुरू करते ही हम ने कुछ करने की बातें की तो जिस यूनियन से हम जुड़े थे उसके नेता धीरज-धीरज कहते। ट्रान्सफर की सँख्या 23 पर पहुँच गई तब यूनियन ने 15 अक्टूबर को श्रम विभाग में अनुचित श्रम व्यवहार की शिकायत डाली। फिर 17 अक्टूबर को 56 माँगों वाला माँग-पत्र यूनियन ने दिया। श्रम विभाग में दोनों मामलों में तारीखें पड़ती रही। बीस तारीखें पड़ चुकी तब भी कोई समाधान नहीं। यूनियन का पंजीकरण भी नहीं हुआ। तब यूनियन 8 जनवरी को चण्डीगढ में हाई कोर्ट गई जहाँ पड़ी 10 फरवरी की तारीख को कुछ नहीं हुआ और 22 अप्रैल की तारीख दे दी। ट्रान्सफर वाले 44 और 12 निकाले हुये हो गये तब तारीखों के चक्रव्यूह से निकलने के लिये बन्दों में चर्चायें हुई और कदम उठाना तय हुआ।

" 18 फरवरी को 2 बजे लाइन जैसी थी वैसी ही छोड़ दी। ए और बी शिफ्ट के मजदूर एकत्र हो कर बैठ गये। हम ने यह अचानक किया था। दो गाड़ी महिला पुलिस और तीन-चार गाड़ी पुरुष पुलिस पहुँची। फैक्ट्री के अन्दर और बाहर पुलिस ही पुलिस। अन्दर और बाहर मजदूर शान्त रहे। साँय 6 बजे मैनेजमेन्ट, श्रम उपायुक्त, थानेदार से वार्ता में हम ने उनकी दाल नहीं गलने दी। हमारे 250 साथी फैक्ट्री के अन्दर जमे रहे। अन्दर मजदूरों ने भूख हड़ताल नहीं की थी बल्कि यह कहा था कि कम्पनी का भोजन नहीं खायेंगे, बाहर से साथी भेजेंगे भोजन। कम्पनी ने 18 फरवरी को अन्दर भोजन नहीं जाने दिया। अगली रोज सुबह नाश्ता भी मैनेजमेन्ट ने अन्दर नहीं जाने दिया। यूनियन से जुड़े लीडरों ने 19 फरवरी को सुबह 9 बजे से ही बैक्सटर गेट पर भाषण देने शुरू कर दिये थे। आई.एम.टी. में हलचल बढने की हालात बन गई थी। लेकिन बात आगे बढ नहीं पाई।

(बाकी पेज दो पर)

✶ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।
✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।
✶ महीने में एक बार छापते हैं, 12,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।